अध्याय छठा

हिन्दी के समस्या प्रधान उपन्यासों में भगवतीबाबू का योगदान

षष्ठम् अध्याय

हिन्दी के समस्या - प्रधान उपन्यासों में भगवतीबाबू का स्थान --

भगवतीबाबू हिन्दी उपन्यास जगत् के महान हस्ताक्षर हैं। वे हिन्दी के समस्या-प्रधान उपन्यासकारों में विशिष्ट स्थान के अधिकारी हैं। उन्होंने सन १९२८ ई. में 'पतन' नामक उपन्यास से, हिन्दी उपन्यास जगत् में प्रवेश किया और सन १९८१ तक (जीवनांतक) लगातार उपन्यासों की रचना करते रहें। पहले-पहल वे चिन्तक के रुप में आये, परंतु धीरे धीरे विचारों से व्यक्तिवादी होकर भी अपने उपन्यासों में समकालीन युग-जीवन की व्यापक समस्याओं का चित्रण करते रहें। उनका उपन्यास-साहित्य-युग-जीवन का दर्पण है, जिसमें विविध सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक समस्याएँ अपने विभिन्न रंगों में सामने आते हैं। अपने समकालीन जन-जीवन के साथ ही, ताजे अतीत के ऐतिहासिक परिवेश, सामाजिक एवं राजनीतिक नव-जागरण, स्वतंत्रता आन्दोलन और स्वतंत्रता के बाद की अधना भारतीय जीवन की बहुमुखी चित्रण प्रस्तुत किया है।

'भूले बिसरे चित्र' और 'टेढे मेढे रास्ते' की अगली कडी, 'सीधी सच्ची बातें' और 'प्रश्न और मरीचिका' हैं। जिनमें सन १८८५ से लेकर १९६२ तक की भारतीय समाज जीवन की यथार्थ झाँकी प्रस्तुत की है। इनमें क्रमश: सन १८८५ से १९३०, १९३०-३१, सन १९३९ से १९४८ और १९४७ से १९६२ के अपने अपने युग की सामाजिक आर्थिक, राजनीतिक धार्मिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं के साथ ही राजनीतिक गतिविधियों, हलचलों और संघर्षों का यथार्थ रुप साकार हो उठा है। 'सामर्थ्य और सीमा' तथा 'सबहिं नचावत राम गुसाईं' में स्वतंत्र भारत की समाज जीवन की विकृत गतिविधियोंपर करारा व्यंग्य कसा है। इस प्रकार वर्माजी का उपन्यास साहित्य बीसवीं शताब्दी के समाज जीवन और बदलते मानवमूल्यों की गाथा प्रस्तुत करने में सक्षम हैं। जहाँ जहाँ वर्माजी का वास्तव्य रहा, जहाँ जहाँ उन्होंने अपने जीवन के कुछ दिन व्यतीत किये, अधिकतर उन्हीं स्थानों का चित्रण उनके उपन्यासों में मिलता है। जिनमें घाटमपुर, हम्मीरपुर, कानपुर, उन्नाव, लखनऊ, इलाहाबाद,

कलकत्ता, दिल्ली, बबंई प्रमुख हैं। इसी कारण उनके उपन्यासों में यथार्थ युग-जीवन की अभिव्यंजना सही अर्थों में हो पायी है।

भगवतीबाबू के उपन्यासों में बीसवीं शताब्दी के विराट जन-जीवन का चित्रण हुआ है। इतिहास के इस कालखण्ड में भारत का स्वाधीनता-आन्दोलन विश्व को चकित कर देनेवाली घटना थी। यह स्वाधीनता-आन्दोलन जहाँ एक ओर भारत को राजनीतिक स्वतंत्रता दिलाने में प्रयत्नशील था, वहाँ दूसरी ओर वह सामाजिक समस्याओं से होकर गुजर रहा था। नारी शिक्षा, पर्दा-प्रथा, अछूतोध्दार, हिन्दु-मुस्लिम संघर्ष, जातिप्रथा आदि अनेक समस्याओं से भारतीय समाज उलझा हुआ था। वर्माजी ने इन सारी समस्याओं को नजदीक से देखा और अपनी कृतियों में उनका स्वाभाविक चित्रण किया है। बीसवीं शताब्दी के समाज जीवन की विभिन्न समस्याओं, नारी की स्थिति, अर्थ निर्भर सामाजिक वर्ग भेद, समाज जीवन में व्याप्त आर्थिक विषमता आदि का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। इसके साथ ही अर्थ लोभ से निर्मित मूल्य-हीनता की सुंदर अभिव्यक्ति हुई है। वर्ण-व्यवस्था के कुत्सित रुप को पहचानकर, इसीकारण समाज तथा धर्म में आयी विकृतियों का विरोध कर, अपने प्रगतिशील दृष्टिकोण का परिचय दिया है। `सबहिं नचावत राम गुसाईं` में बुध्दि, भावना और भाग्य के माध्यम से, बनिया, ब्राह्मण और क्षत्रिय के यथार्थ स्वरुप की अभिव्यंजना की है। परम्परागत वर्ण-व्यवस्था की दृष्टिकोण पर प्रहार करके, उसे केवल स्वार्थ-सिध्दि के कारण मात्र के रुपमें चित्रित किया है। वर्ण व्यवस्था के कारण निर्मित अछूत समस्या का चित्रण कर, उनकी दयनीयता के प्रति सहानुभूति की भावना प्रदर्शित की है। और प्रगतिशील दृष्टिकोण का परिचय देते हुए, युग संदर्भ के बदलते हुए मान्यताओं का विवेचन प्रस्तुत किया है।

वैयक्तिक स्वार्थों के हेतु संयुक्त परिवारों में आये विघटन को अत्यंत सजीवता के साथ प्रस्तुत किया है। विवाह तथा वैवाहिक जीवन की समस्याओं का भी सजीव चित्रण कर, विवाह में अर्थ की प्रधानता को दिखाया है और `प्रभा` तथा `रेखा` के माध्यम से विवाह की स्वतंत्रता का समर्थन भी किया है। परिवारिकता में एकता

बनाये रखने की दृष्टि से ही शायद, वर्माजी ने पत्नी को पति के प्रति पूर्ण समर्पित दिखाया है। नारी - जीवन से सम्बन्धित, दहेज-प्रथा, विधवा-समस्या, अनमेल विवाह की समस्या, वेश्या-समस्या, घर बाहर की समस्या, अवैध प्रेम की समस्या आदि का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है और अपने प्रगतिशील दृष्टिकोण का परिचय दिया है। विधवा नारी के प्रति सहानुभूति दिखायी है, परंतु इनके उपन्यासों में चित्रित विधवा-नारी, अभिजात्य वर्ग से सम्बन्धित होने के कारण सामाजिक जीवन की प्रताडना से मुक्त ही रही है। वेश्यानारी को अभिजात्य वर्ग की नारी से ऊँचा स्थान देकर, अपने प्रगतिशील दृष्टिकोण का ही परिचय दिया है। अवैध प्रेम की समस्या का विशद चित्रण किया है, परंतु ये नारी पात्र सेक्स की नैतिकता का आक्रमण करती हुई दिखाई देती हैं, ये शीघ्र ही पुरुष के साथ शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करने में उताविल दिखाई देती है। अवैध प्रेम की समस्या अपने रोमैंटिक रुप में ही चित्रित हुई है।

भगवतीबाबू ने अपने सुप्रसिध्द उपन्यास 'चित्रलेखा' में पाप-पुण्य की शाश्वत समस्या को उठाया है और यह स्पष्ट किया है कि पाप-पुण्य की कोई परिभाषा संभव नहीं है। वर्माजी ने पाप-पुण्य की समस्या को अत्यंत रोचक ढंग से हमारे सामने प्रस्तुत किया है। 'चित्रलेखा' हिन्दी जगत् की एक सुप्रसिध्द उपन्यास है।

भगवतीबाबू ने स्वतंत्रता-पूर्व और स्वतंत्रता बाद की आर्थिक समस्याओं का सजीव चित्रण प्रस्तुत किया है। आर्थिक विषमता, मानव जीवन में अर्थ की महत्ता, समाज जीवन के साथ राजनीतिक जीवन में पायी जानेवाली आर्थिक सत्ता, भारत की अर्थ व्यवस्था पर पूँजीपतियों का बढता प्रभाव, उनकी शोषण की प्रवृत्ति आदि का सटीक चित्रण प्रस्तुत किया है। करोंडपतियों से लेकर निम्नवर्ग तक में पायी जानेवाली पैसे की अमोघ शक्ति और पैसे का महत्व अत्यंत मार्मिक रुप में प्रस्तुत किया है। सामाजिक समस्याओं के मूल में आर्थिक विषमता को ही सर्व प्रमुख माना है। वर्माजी ने किसी 'वाद' विशेष का सहारा लिये बिना ही, स्वतंत्र रुप से अपने आर्थिक दृष्टिकोण का परिचय दिया है और परम्परागत चली आयी अर्थ व्यवस्थापर आस्था

रखकर, उनमें आये परिवर्तनों को युग जीवन की माँग के रुप में स्वीकारा है। साथ ही साथ आज के व्यक्ति,समाज,धर्म,राजनीति पर,अर्थ की प्रभुता का अत्यंत सजीव चित्रण हमारे सामने रखा है।

भगवतीबाबू ने उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तीम चरण से लेकर आज तक के राजनीतिक पृष्ठभूमि को अपने उपन्यासों में चित्रित करते हुए ,परतंत्र भारत की जनता की स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए छटपटाहट, नयी मान्यताओं और आदर्शों की स्थापना की महत्वाकांक्षा और स्वतंत्र भारत में इन सब की मोह-भंग को स्थिति इन सब का यथार्थ चित्रण किया है। 'भूले बिसरे चित्र' (१८८५) में कांग्रेस की स्थाना से लेकर १९३० तक के स्वाधीनता आन्दोलन का सजीव चित्र खिंचा है। 'टेढे मेढे रास्ते' में सन १९३०-३१ की एक वर्ष की राजनीतिक गतिविधियों का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत कर,एक शाश्वत सत्य की अभिव्यक्ति की है। यह उपन्यास जहाँ तत्कालीन राजनीतिक विचारधाराओं का प्रतिनिधित्व करता है, वहाँ वर्तमान भारत की राजनीतिक विचारधाराओं का भी। आज करीबन चालिस वर्षों के बावजूद भी ऐसा नहीं दिखाई देता कि हमारे नेता इस टेढे मेढे रास्ते को पार कर सके हैं। ' सीधी सच्ची बातें'-में त्रिपुरी कांग्रेस (सन १९३९ से १९४८) से लेकर गांधी हत्या तक की भारत की यथार्थ झाँकी प्रस्तुत की है, इसके साथ ही व्यापक धरातलापर राजनीतिक समस्याओं, हिन्दु-मुस्लिम संघर्षों ,ब्रिटिश सरकार की कूट नीति,देश विभाजन से निर्मित भीषण सांप्रदायिकता,शरणागत समस्या, द्वितीय महायुध्दकालीन स्थिति,बंगाल के अकाल,स्वतंत्रता प्राप्ति आदि घटनाओं को सीधे साधे ढंग से हमारे सामने पेश किया है। हिन्दु - मुस्लिम समस्या को केवल राजनीतिक और धार्मिक दृष्टिकोण से न देखकर सांस्कृतिक रुप में भी देखा है और वह किस प्रकार स्वतंत्र भारत में राजनीतिक ब्लैकमेल का साधन बन बैठा और राजनीतिक स्वार्थ और समझदारी के अभाव में आज भी यह समस्या किसप्रकार उलझी हुई है, इसका यथार्थ दर्शन कराया है।

स्वतंत्र भारत की राजनीतिक गतिविधियों का,देश की शासन व्यवस्था में बढती हुई,उधोगपतियों और पूंजीपतियों की प्रभुता, नौकरशाही,चुनावों की बेढंगी चालों, भ्रष्ट नेतृत्व एवं चरित्र संकट, भ्रष्टाचार, रिश्वत खोरी, मिली-भगत,भाई-

भतिजे वाद आदि अनेक स्वातंत्र्योत्तर राजनीतिक समस्याओं का चित्रण 'प्रश्न और मरीचिका', 'सामर्थ्य और सीमा' तथा 'सबहिं नचावत राम गुसाईं' में देखने को मिलता है। वर्माजी ने इन उपन्यासों में राजनीतिक खोखलेपन के साथ ही भ्रष्ट नेताओं की 'बगुला-भक्ति' का पर्दाफाश भी किया है। स्वतंत्रता-संग्राम कालीन निष्ठा, आत्मबलिदान की भावना तथा तपस्या न जाने कहाँ गायब हो गयी? उसकी जगह नीजि स्वार्थों, सत्ता एवं कुर्सी के मोह ने व्यक्तियों के आदर्शों को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया, मानवीयमूल्य लुप्त से हो गये हैं। "आज हिन्दुस्तान वह नहीं, जो आजादी के पहले था। हरेक आदमी धीरे धीरे चरित्रहीन बनता जा रहा है। सारी सत्ता नौकरशाही के हाथों में है और बेईमानी इस नौकरशाही की नस-नस में भरी हुई है। बड़े अफसर और छोटे अफसर समान भाव से बारी-बारी में हरामखोर और कामचोर हैं। ये लोग सब के सब आपस में मिले हैं और जनता के प्रतिनिधि चाहे विधायक हों, चाहे मंत्री हो, विवश हैं, वे इन लोगों को अनुचित कामों का दण्ड नहीं दे सकते।[1]" क्योंकि वे स्वयं इनसे अनुचित काम करवाते हैं। "मंत्री पूंजीपतियों को उपकृत करते हैं, सरकारी अफसर रिश्वत खाते हैं, ठेकेदार चोर-बाजारी करते हैं और मजदूर हराम खोरी करते हैं। किसी का कोई कसूर नहीं। बांध बधेंगे और टूटेंगे, कारखाने लगाए जायेंगे और जनता के लोग पैसे पैसे पर जान देंगे और बेईमानियाँ करेंगे। इस तरह हमारे देश का निर्माण होता रहेगा।[2]" इस प्रकार भगवतीबाबू ने कॉंग्रेस की स्थापना से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद तक की राजनीतिक ज्वलंत समस्याओं को अत्यंत सजीव रुप में प्रस्तुत किया है। वर्माजी यहाँ उपदेशक या नेता बनकर नहीं आयें, बल्कि एक साहित्यकार के नाते तटस्थ रुप में जो देखा, अनुभव किया, उसी का वास्तव चित्रण करते हैं। तभी तो उनका उपन्यास साहित्य सन १८८५ से अद्यन्त विशाल भारत की राजनीतिक गतिविधियों, राष्ट्रीय चेतना, हलचलों, संघर्षों, परिवर्तनों एवं समस्याओं का जीवन्त चित्रण प्रस्तुत करने में सफल सिध्द हुए हैं।

---

१ प्रश्न और मरीचिका - पृ.सं.१८०, १८७

२ सामर्थ्य और सीमा पृ.सं.२४

भगवतीबाबू ने धार्मिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं को यथार्थ अभिव्यक्ति की है, परंतु धर्म का कोई तात्विक विवेचन प्रस्तुत नहीं किया अपितु उसे हिन्दु-मुस्लिम समस्या के रुप में ही देखा है। हिन्दु तथा मुस्लिम दोनो को धार्मिक संकीर्णताओं पर स्थान स्थान पर व्यंग्य प्रहार करते हुए, आर्य-समाज की प्रगतिवादी विचारधारा के प्रति आस्था दिखायी है और जहाँ कहीं बुराई दिखाई दी, वहाँ उसपर प्रहार किया है। अभिजात्य वर्ग की सांस्कृतिक खोखलेपन को स्पष्ट कर उनकी संस्कृति और सभ्यता पर करारी चोट की है। ग्रामीण संस्कृति के प्रति आस्था दिखाई है। ज्ञानप्रकाश, नवलकिशोर, जगतप्रकाश, रामलोचन पाण्डे, जनार्दनसिंह, मुहम्मद शफी जैसे आदर्श पात्रों की सृष्टि कर, न्याय, ईमानदारी, भलाई और नैतिकता के आदर्श-जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठापना की है। यह आदर्श जीवनमूल्य ही तो हमारे भारतीय संस्कृति के आधार स्तंभ हैं।

भगवतीबाबू की यह एक प्रमुख विशेषता रही है कि जिन विविध समस्याओं को उन्होंने अपने उपन्यासों में उठाया है, वहाँ के केवल उपदेशक की — मुद्रा लेकर उपस्थित नहीं होते या नेताओं की तरह कोरे आदर्शवादी रुप में समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत नहीं करते, अपितु समाज को उसकी असलियत से अवगत करा कर उनकी भलाई बुराई, सुख-दुःख का चित्रण कर, मानव मन की गहराईयों को थामकर, सामाजिक समस्याओं पर ही अपने उपन्यासों के कथानक का निर्माण करते हैं और अत्यंत सफलतापूर्वक यथार्थ रुपमें प्रस्तुत करते हैं। वर्माजी के उपन्यासों में समस्त मानव जीवन की समस्याओं का खुले आम चित्रण मिलता है और उनका कुछ हद तक समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास भी किया है। उन्होंने किसी राजनीतिक 'वाद' विशेष के माध्यम से समस्याओं का समाधान नहीं किया है, क्योंकि उनका नियतिवादी-जीवन दर्शन पर विश्वास था। उनका कहना था "जहाँ समस्या-मूलक उपन्यास किसी निश्चित निदान को निर्धारित करता है, वहाँ वह राजनैतिक प्रचार का माध्यम बनकर अपनी कला को खो देता है।"[१]

---

१ भगवतीचरण वर्मा - साहित्य की मान्यताएँ - पृ.सं.१२७

भगवतीबाबू यथार्थान्वेषी युग साहित्यकार थे। उन्होंने यथातथ्य के रुप में ही युग सत्य का चित्रण किया है। इसके साथ ही साथ संवेदशील हृदय से युग प्रभाव को ग्रहण कर युगीन समसामयिक समस्याओं के यथार्थ चित्र खिंचे हैं। सच्चे अर्थों में उन्होंने एक कलाकार के उत्तरदायित्व का निर्वाह कर चुके हैं। हिन्दो समस्या प्रधान उपन्यास साहित्य में भगवतोबाबू का योगदान प्रशंसनोय है। अन्त में मैं उनके बारे में इतनाही कहना चाहता हूँ कि हिन्दी उपन्यास जगत् में भगवतीबाबू का नाम अमर रहेगा।

••

परिशिष्ट

आधार - ग्रंथ

भगवतीचरण वर्मा के उपन्यास

उपन्यास का नाम	प्रकाशन	प्रयुक्त संस्करण
१. पतन	गंगापुस्तक माला, लखनऊ	सप्तम -१९७०
२. चित्रलेखा	भारती भण्डार, इलाहाबाद	सत्ताइसवां -१९८७
३. तीन वर्ष	-,,-	पांचवा सं.-२०१०
४. टेढे मेढे रास्ते	-,,-	षष्ठम -१९७२
५. आखिरी दाँव	-,,-	द्वितीय सं.-२०२२
६. अपने खिलौने	-,,-	द्वितीय सं.-२०२१
७. भूले बिसरे चित्र	राजकमल, नवी दिल्ली	पाँचवा -१९६९
८. वह फिर नहीं आई	-,,-	पाँचवा -१९७९
९. थके पाँव	पंजाबी पुस्तक भण्डार, दिल्ली	नवीन -१९६९
१०. सामर्थ्य और सीमा	राजकमल, नवी दिल्ली	चतुर्थ -१९८६
११. रेखा	-,,-	तृतीय -१९७०
१२. सीधी सच्ची बातें	-,,-	चतुर्थ -१९८१
१३. सबहिं नचावत राम गुसाईं	-,,-	चतुर्थ -१९८३
१४. प्रश्न और मरीचिका	-,,-	प्रथम -१९७३
१५. युवराज चूण्डा	-,,-	प्रथम -१९७८
१६. धुप्पल	-,,-	द्वितीय -१९८३
१७. चाणक्य	-,,-	तृतीय -१९८६

सहायक ग्रंथ

१. अतीत के गर्त से (संस्मरण) राजकमल, नवी दिल्ली) प्रथम - १९७९
२. सविनय और एक नाराज कविता (संस्मरण राजकमल,
नवी दिल्ली) प्रथम - १९८४

संदर्भ ग्रंथ

लेखक	ग्रंथ नाम	प्रयुक्त संस्करण
१. डॉ.अमरसिंह लोधा	प्रेमचंदोत्तर हिन्दी उपन्यासों में सामाजिक चेतना	१९८४
२. डॉ.आशा बागडी	हिन्दी उपन्यासों में पारिवारिक जीवन	
३. डॉ.कुसुम वार्ष्णेय	भगवतीचरण वर्मा : चित्रलेखा से सीधी सच्ची बातें तक	१९६८
४. डॉ.गणेशन	हिन्दी उपन्यास साहित्य का अध्ययन	१९६२
५. डॉ.चण्डीप्रसाद जोशी	हिन्दी उपन्यास : समाजशास्त्रीय विवेचन	१९६२
६. डॉ.धीरेन्द्र वर्मा	हिन्दी साहित्य कोश	सं.२०१५ वि.
७. आ.नरेन्द्र देव	राष्ट्रीयता और समाजवाद	सं.२००६ वि.
८. प्रतापनारायण टंडन	हिन्दी उपन्यास का परिचयात्मक इतिहास	१९६७
९. पट्टाभिसितारामय्या	कॉंग्रेस का संक्षिप्त इतिहास	१९५८
१०.डॉ.महेन्द्र भटनागर	समस्या मूलक उपन्यासकार प्रेमचंद	
११.डॉ.बैजनाथप्रसाद शुक्ल	भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में युगचेतना	१९७७
१२. डॉ.बेचन	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य	१९६७
१३.संपादक - डॉ.भोलानाथ तिवारी, महेन्द्र चतुर्वेदी, गोबा ओ.पी.	व्यावहारिक हिन्दी कोश	१९८५

१४.	डॉ.रमाकांत श्रीवास्तव	उपन्यासकार भगवतीचरण वर्मा	१९८४
१५.	डॉ.रामदरश मिश्र	हिन्दी उपन्यास : एक अन्तर्यात्रा	१९८२
१६.	संपादक खेलचंद आनंद	हिन्दी के श्रेष्ठ उपन्यासकार	१९७८
१७.	रामधारिसिंह 'दिनकर'	संस्कृति के चार अध्याय	१९५५
१८.	डॉ.विमल भास्कर	हिन्दी में समस्या साहित्य	१९८३
१९.	शिवनारायण श्रीवास्तव	हिन्दी उपन्यास	सं.२०१६
२०.	डॉ.सुभद्रा	हिन्दी उपन्यास : परम्परा और प्रयोग	१९७४
२१.	डॉ.हजारीप्रसाद द्विवेदी:	हिन्दी साहित्य:उद्भव एवं विकास	१९८२
२२.	संपादन, हिन्दी विभाग, पुणे विद्यापीठ	साठोत्तरी हिन्दी साहित्य का परिप्रेक्ष्य	१९८७
२३.	डॉ. त्रिभुवनसिंह	हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद	सं.२०२२

पत्र-पत्रिकाएँ --

१.	धर्मयुग -	१८ से २४ अक्तूबर १९८१
२.	साप्ताहिक हिन्दुस्थान	१५ सितम्बर १९६३
३.	सारिका	जनवरी १९६३